दिनांक :- :- 11-05-2020

कालेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड (कला)

इकाई :- ~~चतुर्थ~~ पाँच

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- बाक्सर-विद्रोह

विदेशियो ने चीन को अपमान और अराजकता के लिए अतिरिक्त कुछ नही दिया। 19वी सदी के उत्तरार्द्ध मे चीन मे उनकी साम्राज्यवादी बन्दर-बाँट शुरू हो गई। ब्रिटेन ने यांगत्सी नदी के किनारे के प्रदेशो, यूनान और तिब्बत मे अपना साम्राज्यवादी जाल का विस्तार किया। रूस ने मंचूरिया, मंगोलिया और तुर्किस्तान की सीमाओ मे अपने खीमे-गाड़ दिए। फ्रांस ने हिन्द चीन पर अधिकार कर लिया। जर्मनी ने शांतुंग प्रायद्वीप

से शेंसी होकर अपना विस्तार किया। 1894-95 के चीन जापान युद्ध में चीन पराजित हुआ। जापान ने भी उसके कुछ प्रदेशों को हड़पना चाहा। यहाँ तक की इटली ने भी चीनी प्रदेश में चीनी प्रदेश में अपना हिस्सा चाहा। इस प्रकार, चीनी तरबूज की कतरन शुरू हो गई। देश भक्त चीनियों को यह बुरा लगा और उन्होंने चीन से विदेशियों को मुक्का मार कर निकाल बाहर करने के लिए विद्रोह कर दिया। यह विद्रोह 1894 में शुरू हुआ और इसे बॉक्सर विद्रोह (Boxer uprising) कहा जाता है इसके निम्नलिखित कारण थे।

① राष्ट्रीयता की भावना— चीन में राष्ट्रीयता की भावना जोर पकड़ रही थी। इसके मूल में पश्चिमी साम्राज्यवाद, चीनी विद्यार्थियों की विदेश-यात्रा शतदिवसीय सुधार योजना की असफलता आदि थी। 1842, 1858, 1860 एवं 1894-95 में चीन को विदेशियों के द्वारा पराजित होना पड़ा था।

उसका राष्ट्रीय अपमान हुआ था। अतः चीनियों ने यह महसूस किया कि उनकी सारी परेशानियों के मूल में पश्चिमी साम्राज्यवाद है। अतः के सामने एक ही रास्ता था कि वे विदेशियों को चीन से निकाल बाहर करें। साथ ही चीनी विद्यार्थियों की विदेश यात्रा ने भी राष्ट्रीयता को जन्म दिया। अनेक चीनी विद्यार्थी अमरीका, जापान और यूरोपीय देशों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाते थे। वे वहाँ की शिक्षण-पद्धति, शासन व्यवस्था, सभ्यता-संस्कृति से काफी प्रभावित थे। वे स्वदेश लौटते तो उन्हें अपनी दीन-हीन स्थिति पर बड़ा दुःख होता था। वे भी अपने देश को पश्चिमी देशों की तरह उन्नत बनाना चाहते थे। विदेशियों को अपने देश से निकाल बाहर करने के बाद ही यह सम्भव था। साथ ही कांग यू वेई, डॉ० सनयात सेन, कु आंग ह्यू आदि व्यक्तियों ने सुधार-आन्दोलन को आगे बढ़ाया था। किंतु शतदिवसीय सुधार (Hundred Days Reform) योजना विफल

रहीं। देश में प्रतिक्रियावादी दल का प्रभाव कायम ही रहा। यह दल विदेशियों के प्रभाव में था। इसी ने तेपिंग विद्रोह को कुचल दिया था। अतः चीनियों को अपने बलबूते सब कुछ करना था। उन्होंने विदेशियों को मुक्का मारकर निकाल बाहर करने की योजना बनाई। बाक्सर विद्रोह की इस पृष्ठभूमि में चीनियों का उभरता हुआ उग्र राष्ट्रवाद (Militant Nationalism) था।

② ईसाइयों से असंतोष— बाक्सर विद्रोह विदेशी-विरोधी (anti foreign) के साथ-साथ ईसाई विरोधी (anti christian) भी था। विद्रोहियों को चीन में ईसाई धर्म-प्रचारकों से बड़ी घृणा थी। वे उन्हें ही अपने सारे कष्टों का मूल मानते थे। उनके चलते ही चीन को पश्चिमी साम्राज्यवाद का शिकार होना पड़ा था। ईसाई धर्म प्रचारक बड़े उद्दंड थे। वे खुले आम प्राचीन चीनी धर्म संस्कृति या रीति-रिवाजों की निन्दा करते थे।

Scanned with CamScanner

तथा अपने धर्म को श्रेष्ठ बतलाते थे दुर्भाग्य स्थिति तो यह थी कि देशी ईसाई (Native christains) भी विदेशी ईसाईयों से दो कदम और आगे बढ़ गए थे नीम हकीम खतरे जान' की कहावत उनके साथ चरितार्थ थी वे अपने आचार-व्यवहारों मे अधिक कट्टर थे। स्वधर्म त्यागी (Renegades) धर्म परिवर्तित (Conveed) देशी ईसाई तो और भी जहर उगलने लगे। उन्हे विदेशी सहायता प्राप्त थी। तथा ईसाई बन जाने के कारण उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ गई थी। उन्हे कई विशेषाधिकार प्राप्त थे। वे अद्भुत कर्मकांड करते थे जिसमें कभी-कभी तो अपने देशवासियों से ही उनकी झड़प हो जाती थी। वे अपने प्राचीन धार्मिक कर्मकांडो तथा चीन के मनीषियो के उपदेशो को भूल गए थे वे ग्राम्य जीवन से सम्बंधित पर्व-त्योहारो या मनोरंजन के लिए व्यय-वहन भी करना नही चाहते थे। उनका कहना था कि यह सब उनके नये धर्म सिद्धान्तो के प्रतिकूल है। वे ग्राम्य पर्व त्योहारो को और

ईसाई (Pagan) बतलाते थे। वे अपने को सर्वज्ञ समझते थे। उनका यह दंभ भी तब और विष उगलने लगता था जब वे अपने देशवासियों की तुलना में अपने को उच्च नैतिक आचरण करने वाला बतलाते थे। इसलिए कि वे ईसाई थे। आमचीनी इन स्वधर्म-त्यागियों को घृणा की दृष्टि से देखते थे। वे सोचते थे कि यह सब ईसाई धर्म-प्रचारकों का ही अभिशाप है। अतः बॉक्सर विद्रोहियों ने सर्वप्रथम देशी ईसाईयों पर ही अपना क्रोध उतारा।

ईसाई धर्म प्रचारकों के साथ उनके किंवदन्तियाँ भी जुड़ी हुई थी। 1900 तक देश के विभिन्न भागों में यह जनश्रुति व्याप्त थी कि ईसाई धर्म-प्रचारक अनेक अमाननीय कार्य भी करते थे। उदाहरणस्वरूप यह कहा जाता था कि वे बच्चों की आँखें निकाल लेते हैं। चले ही यह अफवाह हो या असत्य हो, लेकिन ईसाई-विरोधी भावना उत्पन्न करने में इसने

आग मे भी काम किया!

रोमन कैथोलिक पादरी अपने धर्म परिवर्तित इसाइयो के मामले मुकदमे मे भी अक्सर दखल देते थे वे स्थानीय मैजिस्ट्रेटो या न्यायाधीशो को डरा-धमका कर या अन्य किसी तरह से प्रभावित कर अपने पक्ष मे फैसला करा लेते थे प्रोटेस्टेंट पादरी भी कभी-कभी ऐसा ही करते थे चीनी पदाधिकारी इसे बुरा समझते थे और इसका अन्त चाहते थे बॉक्सर विद्रोह का यह एक कारण बन गया।

③ पश्चिमी साम्राज्यवाद – बॉक्सर विद्रोह का प्रमुख पश्चिमी कारण साम्राज्यवाद था 1842 की नानकिंग संधि के पश्चात विदेशियो ने चीन मे अपना हाथ पाँव फैलाना शुरू कायम कर लिया!

ब्रिटेन, फ्रांस, अमरीका, जापान आदि देशो ने चीन मे अपना-अपना प्रभाव क्षेत्र चुनौती थी। उनमे विदेशवाद-विरोधी (anti foreignism) भावना घर कर गई। उनका यह असंतोष और आक्रोश बॉक्सर विद्रोह मे बदल गया।